Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 18/December/2023 IJRAW: 2024; 3(1):133-135 Accepted: 20/January/2024

किशनगढ़ शहर का भौगोलिक विवरण वर्तमान परिपेक्ष्य मे

[*1]जगदीश प्रसाद, [2]डॉ. रामस्वरूप साहू और [3]रतन लाल रणवा

[*1]सहायक आचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन सीटी, राजस्थान, भारत।

[2]प्राचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन सीटी, राजस्थान, भारत।

[3]सहायक आचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन, जगदीश प्रसाद, सहायक आचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन सीटी, राजस्थान, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र मे वर्तमान किशनगढ़ के भौगोलिक विवरण पर शोध प्रस्तुत किया गया है। किशनगढ़ शहर, मध्य राजस्थान राज्य के उत्तर-पश्चिमी भारत मे स्तिथ है। किशनगढ़ शहर जयपुर से लगभग 80 किमी दक्षिण-पश्चिम में एक ऊंचे क्षेत्र में स्थित है। किशनगढ़ राज्य की स्थापना 1611 ई. में उदयपुर के शासक उदय सिंह के आठवे पुत्र महाराजा किशनसिंह द्वारा की गयी। कुछ समय बाद किशनगढ़ रियासत ने राजधानी के रूप में कार्य किया। 1818 ई. में संपन्न हुई एक संधि के द्वारा किशनगढ़ रियासत ब्रिटिश सत्ता के प्रभुत्व में आ गई थी। 1948 ई. में किशनगढ़ राजस्थान राज्य का हिस्सा बन गया। 18वीं शताब्दी में किशनगढ़ चित्रशैली का विकास हुआ। किशनगढ़ सूती कपड़ों और कृषि उपज का व्यापार केंद्र है तथा किशनगढ़ अजमेर और जयपुर से सड़क और रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। शहर में साबुन, ऊनी कालीन और शॉल का निर्माण किया जाता है। हथकरघा बुनाई, कपड़ा रंगाई और कीमती पत्थर काटना स्थानीय कुटीर उद्योग हैं।

मुख्य शब्द: हथकरघा, जलवायु, नेफ़्थलीन साइनाइट, ग्रेनाइट, सोडोलाइट, सीवरेज, गुन्दोलाव आदि।

प्रस्तावना

इतिहास एवं भूगोल का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। ऐतिहासिक और भौगोलिक तत्व एवं तथ्य एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव इतिहास में भौगोलिक तत्वों ने प्राचीनकाल से ही एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। अनेक क्षेत्रों में उनका प्रभाव दृष्टिगोचर होता आया है। भौगोलिक संरचना एक भू-भाग पर स्थित समाज के प्राकृतिक वातावरण को दर्शाती है, जिसमें जलवायु, क्षेत्रफल, नदियाँ, तालाब, पहाड़, खनिज सम्पदा, फसल, वन-सम्पदा एवं जीव आदि की जानकारी होती है। प्राकृतिक परिस्थितियों ने राज्य की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया है।

राजस्थान के लगभग समग्र पश्चिमी एवं आधे उत्तरी भाग में रेगिस्तान होने के कारण वहाँ की बहुत-सी भूमि खेती करने योग्य नहीं है। यही दशा पथरीली भूमि की है क्योंकि रेगिस्तानी एवं पथरीली भूमि होने के कारण ही यहाँ अकाल की स्थिति बड़े पैमाने पर उत्पन्न होती रही है। राजस्थान का अरावली पर्वत क्षेत्र राजस्थान को दो क्षेत्रों में विभाजित करता है, जिसको पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्र कह सकते हैं। पश्चिमी राजस्थान में बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर और जयपुर राज्य का शेखावाटी क्षेत्र है। यह प्रायः रेगिस्तान है, जिसमें राजपूतानें की 3/5 भाग भूमि का समावेश होता है। राजस्थान भारत के पश्चिमी भाग में स्थित है। राजस्थान के विभिन्न देशी राज्यों के नाम प्रसिद्ध रहे थे साथ ही शासकों के रहने के साथ, समय-समय पर उन राज्यों के नामों में भी परिवर्तन होता रहा है।

साहित्यावलोकन

डॉ. मोहनलाल गुप्ता द्वारा लिखित शोध "किशनगढ़ राज्य का इतिहास" में किशनगढ़ के इतिहास पर विस्तार पूर्वक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। डॉ. माणक जैन द्वारा लिखे गए शोध "किशनगढ़ राज्य का ऐतिहासिक एवं आर्थिक सिंहावलोकन" में किशनगढ़ राज्य के ऐतिहासिक एवं आर्थिक विषय विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं। पंडित बंशीधर शर्मा द्वारा लिखे गए शोध "किशनगढ़ राज्य का भूगोल" में किशनगढ़ राज्य के भौगोलिक स्वरूप पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं।

शोध उद्देश्य

शोध का प्रमुख उद्देश्य किशनगढ़ के वर्तमान के भौगोलिक विवरण को प्रस्तुत करना। किशनगढ़ क्षेत्र के वर्तमान भौगोलिक स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से व्याख्यात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधि को प्रयोग में लाया गया है। शोध अध्ययन हेतु पुस्तक व

***Corresponding Author:** जगदीश प्रसाद

सरकारी रिकॉर्ड आदि का शोध उपकरणों के रूप में प्रयोग किया गया है।

किशनगढ़ का भौगोलिक विवरण

किशनगढ़ राज्य के उत्तर तथा उत्तर पश्चिम में जोधपुर (मारवाड़) रियासत, पूर्व में जयपुर (आम्बेर) रियासत, पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम में ब्रिटिश राज्य का अजमेर मेरवाड़ा एवं धुर दक्षिण में शाहपुरा रियासत स्थित थी। किशनगढ़ रियासत राजपूताने के लगभग मध्य में 26° 17' से 26° 59° उत्तरी अक्षांशों और 74° 40' से 75° 11' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित थी। [1] इसके उत्तर तथा उत्तर पश्चिम में जोधपुर (मारवाड़) रियासत, पूर्व में जयपुर (आम्बेर) रियासत, पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम में ब्रिटिश राज्य का अजमेर मेरवाड़ा एवं धुर दक्षिण में शाहपुरा रियासत स्थित थी। संयुक्त राजस्थान में विलीनीकरण से पूर्व, किशनगढ़ रियासत का क्षेत्रफल 858 वर्गमील था। [2] मारवाड़ रियासत, किशनगढ़ रियासत की तुलना में लगभग 41 गुना बड़ी थी।।

चित्रा 1: किशनगढ़ का नक्शा

किशनगढ़ रियासत पाँच पृथक लघु खण्डों को छोड़कर, दो संकीर्ण भूभागों की पट्टियों से निर्मित है जो एक दूसरे से अलग हैं। इन दोनों पट्टियों में से उत्तरी भाग बड़ा तथा रेतीला है। किशनगढ़ रियासत उत्तर से दक्षिण में 80 मील लम्बी तथा पूर्व से पश्चिम में 2 से 20 मील तक चौड़ाई में स्थित थी। रियासत का मध्य भाग 20 मील चौड़ा था जबकि इसका धुर दक्षिण बिंदु केवल 2 मील चौड़ा था। इस प्रकार सम्पूर्ण रियासत की आकृति बेलनाकार थी।

किशनगढ़ की वर्तमान भौगोलिक संरचना

किशनगढ़ रियासत के उत्तरी क्षेत्र में कुछ अंतरालों पर स्थित पहाड़ियों की श्रृंखला विश्व की सबसे प्राचीन अरावली पर्वत श्रृंखला का हिस्सा हैं। ये अवसादी चट्टानों से बनी हुई हैं किंतु लाखों वर्षों के अंतराल में इनका उच्च स्तरीय परिवर्तन हो गया है। इन चट्टानों में क्रिस्टलीकृत चूना पत्थर की स्तरों के जमाव उपस्थित हैं जिनके कारण इन चट्टानों में श्वेत एवं अन्य रंगों का कीमती पत्थर निकलता था। दक्षिण पूर्व के मैदान और दक्षिणी भाग में मुख्यतः ग्रेनाईट जैसी चट्टानों की उपस्थिति है। इन चट्टानों में बड़ी मात्रा में लावा जमा रहता है जिनमें रवेदार पैग्मेटाइट भी मिलता है। इन चट्टानों में बाजार में बेचने योग्य माइका की प्लेटें भी विद्यमान है। किशनगढ़ के निकट इलोलाइट साइनाट्स के दुर्लभ समूह मिलते थे। इनमें सोडालाइट की अत्यंत दुर्लभ किस्म भी उपलबध थी। सोडोलाइट पदार्थ की विशेषता यह थी कि यदि इस पदार्थ को कुछ सप्ताह की अवधि के लिए अंधेरे में रख दिया जाये तो इनमें चमकदार गुलाबी रंग का पुट आ जाता था जो प्रकाश के सम्पर्क में आने पर कुछ ही सैकेण्ड्स में पुनः लुप्त हो जाता था। यह तब तक रंगहीन बना रहता था जब तक कि इसे पुनः अंधेरे में कुछ सप्ताह की अवधि के लिए सुरक्षित नहीं किया जाये। सरवाड़ के निकट माइका के विशाल शैल उपस्थित थे। इन चट्टानों में बड़े-बड़े आकार के पारदर्शी, और सुंदर गारनेट पाये जाते थे। किशनगढ़ की सबसे ऊँची पहाड़ी की ऊँचाई समुद्र तल से 2045 फीट थी। किशनगढ़ के उत्तरवर्ती क्षेत्र को तीन समानान्तर अरावली श्रेणियां, दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व तक पार करती थीं। इस क्षेत्र में समुद्री सतह से औसत ऊँचाई 623.33 मीटर है। यह जयपुर अजमेर राजमार्ग पर अजमेर से 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।[3]

किशनगढ़ के प्रमुख प्राकृतिक भाग

किशनगढ़ रियासत को तीन प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता था-

- **उत्तर का रेतीला भाग:** इसमें रूपनगढ़ का अधिकांश भाग आता था।
- **मध्य का पहाड़ी भाग:** इसमें रूपनगढ़ का दक्षिणी भाग और किशनगढ़ का उत्तरी भाग स्थित था। इस भाग में दो हजार फीट ऊँची पर्वत श्रेणियाँ भी थीं।
- दक्षिण का मैदानी भाग मासी और डाई नदी वाला उपजाऊ व समतल भाग जो दक्षिण का उपजाऊ भाग कहलाता था। [4]

किशनगढ़ की प्रमुख नदियाँ

किशनगढ़ में कोई हमेशा बहने वाली नदी नहीं थी, केवल बरसाती नदियाँ बहती थीं। इनमें वर्षा के तत्काल बाद कुछ पानी बहता था।

- **रूपन:** रूपन नदी उत्तर पूर्व में अर्थात रूपनगढ़ के पास बहती हुई सांभर झील में मिल गई थी।
- **मासी:** मासी नदी किशनगढ़ के गूंदोलाव तालाब से निकल कर जयपुर राज्य में प्रवेश कर जाती थी। मासी नदी की एक शाखा सोहादरा कहलाती थी।
- **डाई:** डाई नदी अजमेर कमिश्नरी क्षेत्र के भिनाय कस्बे से निकल कर किशनगढ़ रियासत के सरवाड़ परगने में बहती हुई जयपुर रियासत की बनास नदी में जा मिलती थी। अब इस नदी का मार्ग एक बांध के द्वारा अवरुद्ध कर दिया गया है। [5]
- किशनगढ़ रियासत के मुख्य तालाबों के नाम गुंदोलाव (गुंडोला), रलावता, डीडवाड़ा, बरना, रामसमद, पाटन और बुहारू है।

The climate of Kishangarh state was dry and healthy but there was an outbreak of malaria fever in the months of October-November when winter started after the rainy season. The annual average rainfall in the state was between 20 to 21 inches. In 1892 AD, the state received 36 inches of rainfall whereas in 1899, only four and a half inches of rainfall occurred. The northern part of the capital state received more rainfall than the southern part.

चित्रा 2: किशनगढ़ का फूल महल

पहले किशनगढ़ रियासत हरा-भरा क्षेत्र था। यहाँ प्राकृतिक दृश्यों की अद्भुत छटा देखने को मिलती थी। सम्पूर्ण क्षेत्र झीलों, पहाड़ों और अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों से परिपूर्ण था। प्राकृतिक परिवेश कला और साहित्य सृजन के अनुकूल होने के कारण किशनगढ़ रियासत में कला और साहित्य का पूर्ण विकास हुआ। किशनगढ़ का प्राकृतिक परिवेश कलाकारों के लिए प्रेरणा दायक एवं चित्रांकन का विषय रहा। किशनगढ़ का उत्तरी भाग तीन छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ था तथा दक्षिणी भाग पठार के रूप में था यह नगर खूबसूरत गुंदोलाव झील के किनारे पर स्थित है। झील के किनारे-किनारे सामन्तों एवं शासकों के अनेक महल व गढ़ियां बनी हुई हैं जो मध्ययुगीन सामंती परिवेश की झांकी प्रस्तुत करती हैं। झील के एक किनारे पर फूल महल स्थित है। झील के मध्य में एक सुन्दर जल महल है जो मोखम विलास के नाम से जाना जाता है। फूल महल से मोखम विलास तक नाव के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। वातावरण के अनुसार ही यहाँ के चित्रों में प्रकृति का चित्रण हुआ। प्रकृति के विस्तृत वातावरण और सुंदर परिवेश को चित्रित करने का श्रेय किशनगढ़ शैली को ही है। किशनगढ़ रियासत के उत्तरी एवं मध्य, भाग में स्थित जंगलों में एण्टीलोप, छोटे हिरण, जंगली सूअर एवं नील गाय आदि पशु मिलते थे। रियासत में स्थित पहाड़ियों में चीते, लक्कड़बग्घे तथा भेड़िये पाये जाते थे। किशनगढ़ रियासत की मुख्य फसलें मक्का, ज्वार, बाजरा, तिलहन, कपास, मूंग, मोठ, जौ, चना, गेहूँ, जीरा आदि थीं। सीमित मात्रा में फलोत्पादन भी किया जाता था।

किशनगढ़ रियासत में किशनगढ़, रूपनगढ़ एवं सरवाड़ नामक तीन नगर एवं 218 गाँव स्थित थे। 1850 के दशक में किशनगढ़ रियासत की जनसंख्या 70,952 थी। 1881 ई. में 1,12,633 थी। 1891 ई. में रियासत की जनसंख्या 1,25,516 हो गई। ए. जी. जी. ट्रेवर की फेमीन रिपोर्ट के अनुसार 1891-92 ई. में रियासत में अकाल से एक चौथाई जनसंख्या कम हो गई। 1901 ई. में रियासत की जनसंख्या घटकर 90,970 रह गई जो 1942 में बढ़कर 1,04,500 हो गई। [6] 2011 की जनगणना के अनुसार किशनगढ़ की जनसंख्या 154886 लगभग है। किशनगढ़ नगर परिषद का कुल प्रशासन 28,353 घरों पर है, जहां यह पानी और सीवरेज जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है। यह नगर परिषद सीमा के भीतर सड़कें बनाने और अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली संपत्तियों पर कर लगाने के लिए भी अधिकृत है।

किशनगढ़ के समसामयिक आकड़े

2024 में किशनगढ़ नगर परिषद की वर्तमान अनुमानित जनसंख्या लगभग 219,000 है। किशनगढ़ शहर के लिए 2021 की जनगणना कार्यक्रम को कोरोना महामारी के कारण स्थगित कर दिया गया है। किशनगढ़ (एम सीएल) में अनुसूचित जाति (एससी) 16.06% है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) कुल जनसंख्या का 1.15% है। कुल जनसंख्या में से, 47,776 लोग काम या व्यावसायिक गतिविधि में लगे हुए थे। इनमें से 41,393 पुरुष थे जबकि 6,383 महिलाएं थीं। [7] जनगणना सर्वेक्षण में, श्रमिक को उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है जो व्यवसाय, नौकरी, सेवा और कृषक और श्रमिक गतिविधि करता है। कुल 47776 कामकाजी आबादी में से 92.74% मुख्य कार्य में लगे हुए थे जबकि कुल श्रमिकों में से 7.26% सीमांत कार्य में लगे हुए थे।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र मे किशनगढ़ के वर्तमान भौगोलिक परिपेक्ष्य पर प्रकाश डाला गया है। किशनगढ़ मार्बल सिटी के नाम से तो विख्यात है ही, यहां का डंपिंग यार्ड भी काफी चर्चित है। मार्बल मंडी के नाम से मशहूर किशनगढ़ में 70% मार्बल एवं 30% ग्रेनाइट का कारोबार चलता है। किशनगढ़ वर्तमान में पूरे देश में मार्बल मंडी के रूप में विख्यात है। देश- विदेश से मार्बल एवं ग्रेनाइट खरीदने हेतु लोग आते हैं। सैकड़ों की संख्या में मार्बल के गोदाम, गैंगसा, कटर स्थित हैं तथा हजारों की संख्या में मजदूर आसपास के गांवों से रोजगार हेतु यहां आते हैं। मार्बल व्यवसाय आसपास के लाखों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देता है। किशनगढ़ शहर अरावली पर्वतमाला की गोद में अजमेर जिला मुख्यालय से 27 किलोमीटर एवं जयपुर से 100 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर स्थित है। किशनगढ़ देश के शेष भागों से सड़क, रेल एवं हवाई तीनों मार्ग से जुड़ा हुआ है। किशनगढ़ एयरपोर्ट से हैदराबाद दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, इंदौर एवं उदयपुर आदि शहरों के लिए नियमित उड़ान भरी जाती है। नया बस स्टैंड के पास स्थित अरावली की पहाड़ियां नेफ्लीन सायनाइट नामक पत्थर के लिए देश भर में विख्यात हैं।

संदर्भ

1. हंटर, डॉ. डब्ल्यू. डब्ल्यू. – दी ईम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया, वॉल्यूम – XXII, मई 1900 ई., पृ.- 222
2. एडमिनेस्टेरिव रिपोर्ट ऑफ किशनगढ़ स्टेट, सन 1909-10, पृ.- 10.
3. जैन, डॉ. माणक – किशनगढ़ राज्य का ऐतिहासिक एवं आर्थिक सिंहावलोकन, युग-युगान्तर अजमेर, (इतिहास विभाग) 2005-2006 म.द.स. विश्वविधालय, अजमेर, पृ.- 120.
4. गुप्ता, डॉ. मोहनलाल – किशनगढ़ राज्य इतिहास, जोधपुर, 2018, पृ.- 8.
5. शर्मा, पं. बंशीधर – किशनगढ़ राज्य का भूगोल, पृ.- 16-18.
6. गुप्ता, डॉ. मोहनलाल – किशनगढ़ राज्य इतिहास, जोधपुर, 2018, पृ.- 10.
7. किशनगढ़ की जनगणना 2011 से 2024
8. https://www.census2011.co.in/data/town/800568-kishangarh-rajasthan.html